License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

1 यूहन्ना 1:1–2:2

यूहन्ना ने यीशु को जीवन का वचन बताया। इसका अर्थ है कि यीशु परमेश्वर का वचन हैं। इसका यह भी अर्थ है कि यीशु के पास अनन्त जीवन है। मृत्यु उन्हें नष्ट नहीं कर सकी।

जब यीशु पृथ्वी पर रहते थे, तब यूहन्ना और अन्य प्रेरित उन्हें बहुत अच्छी तरह जानते थे। इस प्रकार, यूहन्ना और 12 शिष्यों (शिष्य) यीशु के साथ जीवन साझा करते थे।

परमेश्वर चाहते हैं कि सभी लोग उनके साथ जीवन साझा करें। परमेश्वर के साथ जीवन साझा करने का अर्थ है परमेश्वर को जानना। इसका अर्थ है उनके साथ मित्रता में रहना और उनके प्रेम से परिपूर्ण होना। यह परमेश्वर के स्वभाव में सहभागी होने का एक और तरीका है (2 पतरस 1:4)। यह तब संभव है जब लोग परमेश्वर के प्रकाश में चलते हैं।

लोग परमेश्वर के प्रकाश में चलते हैं जब वे यीशु पर भरोसा करते हैं कि वे उनके पापों को क्षमा करेंगे। उन्हें यह पहचानना चाहिए कि वे पापपूर्ण बातें सोचते, बोलते और करते हैं। उन्हें यह परमेश्वर के सामने स्वीकार करना चाहिए। परमेश्वर हमेशा उन लोगों को क्षमा करते हैं जो अपने पापों से पश्चाताप करते हैं।

पाप उस अंधकार के समान है जो संसार को ढक लेता है। पापों की क्षमा प्राप्त करना लोगों को प्रकाश में रहने की अनुमति देता है। परमेश्वर की ज्योति में चलना भी परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना और यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना है।

1 यूहन्ना 2:3–14

परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना ही वह तरीका है जिससे लोग दिखाते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं। इसका अर्थ है उस प्रकार से जीना, जैसा यीशु ने लोगों को जीने की शिक्षा दी थी। इसे मसीह की व्यवस्था कहा गया।

मसीह की व्यवस्था परमेश्वर से प्रेम करने और दूसरों से प्रेम करने के विषय में है। यदि लोग घृणा से भरे होते हैं, तो इसका अर्थ है कि वे अब भी पाप के नियंत्रण में हैं। यूहन्ना ने इसे परमेश्वर की ज्योति के बजाय अंधकार में होना कहा है।

यूहन्ना ने सन्तानों, पिताओं और युवकों का उल्लेख किया। वह उन लोगों की उम्र के बारे में बात नहीं कर रहे थे जिन्हें उन्होंने लिखा था। वे विश्वासियों के परमेश्वर के साथ संबंध को वर्णित कर रहे थे। जैसे-जैसे वे अपने विश्वास में बढ़ते हैं, उनका संबंध बदलता जाता है। परमेश्वर उनके पिता हैं, जो उनके पापों को क्षमा करते हैं। विश्वासी परमेश्वर को गहराई से जानते हैं। वे दुष्ट के विरुद्ध एक आत्मिक युद्ध में हैं। दुष्ट शैतान है। परमेश्वर का वचन विश्वासियों को यह सामर्थ्य देता है कि वे बुराई को ना कह सकें।

1 यूहन्ना 2:15–29

यूहन्ना ने कहा कि विश्वासियों को संसार से प्रेम नहीं करना चाहिए। यहाँ "संसार" का अर्थ वह जीवन शैली है जो पापमय इच्छाओं की आज्ञा का पालन करने पर आधारित है। वह संसार सदा के लिए नहीं रहेगा; वह समाप्त हो जाएगा। परन्तु जो परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं, वे सदा जीवित रहेंगे।

जब तक यीशु का पुनरागमन नहीं होता, लोग अंतिम दिनों में जी रहे हैं। यूहन्ना ने उन झूठों के बारे में बात की जो मसीह के शत्रु अंतिम दिनों में सिखाते हैं। वे सिखाते हैं कि यीशु मसीहा नहीं हैं। वे कहते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र नहीं हैं और वे प्रभु नहीं हैं। यीशु को नकारने का अर्थ है कि वे परमेश्वर पिता के साथ जीवन साझा नहीं कर सकते।

यीशु के विषय में ये झूठ उस पवित्र आत्मा की शिक्षाओं के विरुद्ध हैं जो विश्वासियों को सिखाते हैं। पवित्र आत्मा द्वारा सिखाई गई सच्चाई में विश्वास करना, विश्वासियों को यीशु से जोड़े रखता है। यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाया था कि उनके साथ जुड़े रहना कितना महत्वपूर्ण है (यूहन्ना अध्याय 15)।

1 यूहन्ना 3:1–24

यूहन्ना ने परमेश्वर की सन्तानों और शैतान की सन्तानों के बीच के अन्तर को समझाया। परमेश्वर की सन्तानें परमेश्वर के परिवार का हिस्सा होती हैं और उन्होंने पिता का प्रेम प्राप्त किया है। वे अपने पापों को परमेश्वर के सामने स्वीकार करते हैं और जानबूझकर पाप करते नहीं रहते। क्योंकि वे यीशु से जुड़े हुए हैं, उनमें परमेश्वर का स्वभाव है।

उनकी सबसे बड़ी आशा यह है कि वे यीशु को उसी रूप में देख सकें जैसे वह वास्तव में हैं। यह तब होगा जब यीशु पृथ्वी पर लौटेंगे। विश्वासियों को यह पूरी तरह ज्ञात नहीं है कि अनन्त जीवन कैसा होगा, परन्तु वे यह जानते हैं कि वे यीशु के समान होंगे। इसी कारण वे पृथ्वी पर रहते हुए यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हैं। इसका अर्थ यह है कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उसकी आज्ञा का पालन करते हैं और दूसरों से प्रेम करते हैं।

यीशु ने दूसरों के प्रति प्रेम के कारण स्वयं को बलिदान कर दिया। विश्वासियों का दूसरों के प्रति प्रेम दिखाने का एक तरीका यह है कि वे जरूरतमंद लोगों की मदद करते हैं। उनका सही और गलत का बोध उन्हें यह जानने में मदद करता है कि क्या वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर रहे हैं। यही बात यूहन्ना का यह तात्पर्य था कि विश्वासियों को उनके हृदय द्वारा न्याय किया जाएगा।

विश्वासियों को यह सुनिश्चित करने में असमंजस की स्थिति में नहीं रहना चाहिए कि वे परमेश्वर के हैं। पवित्र आत्मा उनके भीतर वास करता है और उन्हें इस बात का आश्वासन देता है। आत्मा उन्हें परमेश्वर से प्रार्थना करने में साहसिक बनाता है और परमेश्वर को प्रसन्न करने में सहायता करता है।

जो लोग शैतान के उदाहरण का अनुसरण करते हुए पापपूर्ण कार्य करते हैं, वे शैतान के बच्चे हैं। वे दूसरों के प्रति प्रेम से पूर्ण नहीं होते। जिस प्रकार वे दूसरों के साथ व्यवहार करते हैं, वह नफरत पर आधारित होता है। कैन इसका एक उदाहरण था। यूहन्ना ने नफरत की तुलना हत्या से की। उन्होंने ऐसा करके दिखाया कि नफरत कितनी खतरनाक होती है। हर कोई जो नफरत से भरा होता है, वह लोगों की हत्या नहीं करता। लेकिन नफरत के कारण लोग बुरा व्यवहार सहते हैं बजाय इसके कि उनकी देखभाल की जाए।

1 यूहन्ना 4:1–6

यूहन्ना ने विश्वासियों को फिर से झूठे भविष्यद्वक्ताओं और झूठे शिक्षकों के बारे में चेतावनी दी। ये लोग यीशु के बारे में झूठी बातें सिखाते थे और जानबूझकर विश्वासियों को धोखा देने का प्रयास करते थे। वे ऐसी बातें नहीं बोल रहे थे जो परमेश्वर के आत्मा ने उन्हें सिखाई हों। वे उन आत्माओं का अनुसरण कर रहे थे जो परमेश्वर का विरोध करती हैं।

ये आत्माएँ दुष्ट आत्मिक प्राणी हैं। यूहन्ना ने विश्वासियों से कहा कि वे इन आत्माओं की परीक्षा लें। इसका अर्थ है कि विश्वासियों को सिखाए जा रहे विषय का अध्ययन करना चाहिए। उन्हें देखना चाहिए कि क्या यह यीशु के बारे में सत्य के साथ मेल खाता है।

एक झूठ जो सिखाया जा रहा था वह यह था कि यीशु वास्तव में मनुष्य नहीं थे। यह एक सोचने के तरीके पर आधारित था जिसे डोसेटिसिज्म कहा जाता है। आत्मिक जीव और लोग जो यह शिक्षा देते हैं, वे परमेश्वर से नहीं हैं। वे उस से संबंध रखते हैं जो संसार में है। यह शैतान को संदर्भित करने का एक और तरीका है।

यूहन्ना ने विश्वासियों को याद दिलाया कि वे परमेश्वर के हैं और परमेश्वर उनके अंदर हैं। परमेश्वर शैतान और सभी बुराईयों से अधिक शक्तिशाली हैं।

1 यूहन्ना 4:7–21

यूहन्ना ने अपने सुसमाचार की शुरुआत में लिखा कि किसी ने भी परमेश्वर को कभी नहीं देखा। फिर यूहन्ना 1:18 में उन्होंने स्पष्ट किया कि यीशु ने परमेश्वर के स्वरूप को प्रकट किया। जो कुछ यीशु ने प्रकट किया, वह यह है कि परमेश्वर प्रेम है।

यीशु ने यह स्पष्ट किया कि उन्होंने लोगों को पाप से बचाने के लिए अपना जीवन दिया। उन्होंने यह इसलिए किया ताकि लोग मृत्यु से बच सकें और सदा के लिए परमेश्वर के साथ जीवन साझा कर सकें। उन्होंने यह इसलिए किया क्योंकि परमेश्वर लोगों से प्रेम करते हैं। जब लोग विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं, तो परमेश्वर उनके अंदर निवास करते हैं। इसका अर्थ है कि परमेश्वर का प्रेम उनके अंदर है।

यूहन्ना ने फिर से लिखा कि किसी ने भी परमेश्वर को कभी नहीं देखा है। लेकिन विश्वासियों के माध्यम से अन्य लोग देख सकते हैं कि परमेश्वर कैसे हैं। वे ऐसा इसलिए कर सकते हैं क्योंकि उनके अंदर परमेश्वर का प्रेम है। यह एक तरीका है जिससे वे यीशु के समान होते हैं। जब वे दूसरों के प्रति प्रेम दिखाते हैं, तो परमेश्वर का प्रेम उनमें पूर्ण हो जाता है।

परमेश्वर का प्रेम पूर्ण और संपूर्ण और सिद्ध है। यही वह प्रेम है जिस पर विश्वासियों का भरोसा होता है और जिसे वे दूसरों के साथ साझा करते हैं। उस प्रकार के प्रेम में कोई घृणा नहीं होती और डरने की कोई बात नहीं होती।

1 यूहन्ना 5:1–21

यीशु के बारे में सत्य यह है कि वे परमेश्वर के पुत्र हैं और पूर्ण रूप से मानव हैं। यूहन्ना ने तीन गवाहों का उल्लेख किया जो इस सत्य को प्रमाणित करते हैं। पहला गवाह यह है कि यीशु का जन्म उसी प्रकार हुआ जैसे मनुष्यों का जन्म होता है। दूसरा गवाह यह है कि उनकी मृत्यु उसी प्रकार हुई जैसे मनुष्यों की मृत्यु होती है। तीसरा गवाह पवित्र आत्मा है। परमेश्वर की आत्मा सिखाती है कि परमेश्वर के पुत्र का एक मानव शरीर है। जो इस पर विश्वास करते हैं, उन्हें यीशु से जीवन प्राप्त होता है।

परमेश्वर की संतान को यह निश्चितता होता है कि उन्हें परमेश्वर का प्रेम प्राप्त है और उन्हें यीशु से जीवन प्राप्त है। यह उन्हें परमेश्वर से प्रार्थना करने और उनकी आज्ञाओं का पालन करने में साहसी बनाता है। यूहन्ना ने विश्वासियों को परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने के लिए प्रेरित किया। वे ऐसा इसलिए कर सकते थे क्योंकि उन्होंने संसार के ऊपर आत्मिक युद्ध में विजय प्राप्त की थी। इसका अर्थ था कि यीशु ने उन्हें शैतान के नियंत्रण से मुक्त कर दिया था। शैतान संसार को इस तरह नियंत्रित करता है कि वह लोगों को पाप के दास बनाए रखता है। विश्वासियों ने यीशु पर विश्वास किया है और यह मानते हैं कि उसने उन्हें स्वतंत्र किया है।

1 **यूहन्ना** *5:1–21*

इसीलिए परमेश्वर की संतान का उद्देश्य बार-बार पाप करना नहीं होता। यदि वे ऐसा करते हैं, तो यह एक ऐसा पाप बन जाता है जो मृत्यु की ओर ले जाता है। इसका अर्थ है कि लोग पाप करते रहना चुनते हैं और यीशु से जीवन प्राप्त करने से इनकार करते हैं। इसके बजाय, परमेश्वर की संतान प्रार्थना करते हैं और परमेश्वर द्वारा क्षमा किए जाते हैं। वे केवल परमेश्वर की आराधना करते हैं। वे यीशु के हैं और उनकी सच्चे परमेश्वर के रूप में उपासना करते हैं।